३ भारत की सुरक्षा व्यवस्था

चलो दोहराई करेंगे !

पिछले अध्याय में हमने भारत की विदेश नीति के संबंध में अध्ययन किया। विदेशी आक्रमण और आंतरिक अव्यवस्था से संरक्षण करना, सीमारेखा सुरक्षित रखना ये राष्ट्र के प्राथमिक हित संबंध होते हैं यह भी हमें समझ में आ गया। इसके लिए प्रत्येक राष्ट्र राष्ट्रीय स्तर पर एक मजबूत सुरक्षा व्यवस्था निर्माण करता है। भारत ने भी ऐसी राष्ट्रीय सुरक्षा व्यवस्था निर्माण की है तथा इस अध्याय में हम उसके स्वरूप और सुरक्षा व्यवस्था के समक्ष आने वाले आहवानों पर विचार करेंगे।

राष्ट्रीय सुरक्षा माने क्या?

अंतरराष्ट्रीय व्यवस्था प्रभुत्व संपन्न राष्ट्रों की बनी है। यद्यपि प्रभुत्व संपन्न राष्ट्र एक-दूसरे को सहयोग देते हैं तो भी कभी-कभी उनमें संघर्ष होता ही है। विविध राष्ट्रों में सीमारेखा संबंधी विवाद होते हैं तो कभी-कभी पानी के बँटवारे को लेकर उनमें संघर्ष निर्माण होता है। अंतरराष्ट्रीय समझौता का पालन न करना, एक-दूसरे से निरंतर स्पर्धा करना, पड़ोसी देशों से निर्वासितों के जत्थे आना ये संघर्ष के कुछ अन्य कारण हो सकते हैं। इस प्रकार राष्ट्रों में परस्पर विरोधी हित संबंध निर्माण हो जाने पर उनके निराकरण समझौते, चर्चा के आधार पर किए जाते हैं परंतु जब ऐसे प्रयत्न अधूरे जान पड़ते हैं, तब कोई राष्ट्र युद्ध का भी विचार करता है। एक राष्ट्र द्वारा दूसरे राष्ट्र पर आक्रमण करना उस राष्ट्र की प्रभुत्व संपन्नता को चुनौती देना इस कारण उस राष्ट्र की सुरक्षा के सम्मुख खतरा निर्माण होता है। आक्रमक राष्ट्रों के सैन्य सामर्थ्य के कारण इस तरह की चुनौतियाँ निर्माण हो जाती हैं। किसी भी परिस्थिति में राष्ट्र की प्रभुत्व संपन्नता और अस्तित्व की रक्षा करना यह शासन का प्रथम कर्तव्य और जिम्मेदारी होने से राज्य को अपनी सुरक्षा व्यवस्था कायम तत्पर और अद्यतम रखनी पड़ती है, इसे राष्ट्रीय सुरक्षा कहते हैं।

बताइए तो?

क्या आप भारत और पड़ोसी देशों के संदर्भ में परस्पर पूरक और परस्पर विरोधी हित संबंधों के कुछ उदाहरण बता सकते हैं?

राष्ट्रीय सुरक्षा को संरक्षित रखने के उपाय

- राष्ट्र की सुरक्षा का संबंध भौगोलिकता के साथ जोड़ा हुआ है। भोगोलिक दृष्टि से अधिक निकट होने वाले राष्ट्र की ओर से राष्ट्रीय सुरक्षा को खतरा निर्माण होने की संभावना होती है। हमारी सीमारेखाओं पर मँड़राने वाला खतरा कौन-सा है तथा वह किसकी ओर से है, यह पहचानना महत्त्वपूर्ण है।
- इस खतरे को दूर रखना हो तो इसके लिए राष्ट्र को अपनी सैन्य शक्ति बढ़ानी पड़ती है। आधुनिकी तकनीकी ज्ञान स्वीकार करते हुए खतरे के संबंध में अनुमान लगाना, शस्त्रास्त्रों का निर्माण, रक्षा दल का आधुनिकीकरण तथा उसे अद्यतम करना आदि मार्गों का अवलंब किया जाता है।
- युद्ध के मार्ग से संघर्ष का निराकरण करना तथा राष्ट्रीय सुरक्षा के प्रति सावधानी रखना अधिक तनावपूर्ण और अंतरराष्ट्रीय शांति पर

विचार कीजिए और बताइए।

शस्त्र सामर्थ्य के संबंध में सभी देश समान स्तर पर नहीं हैं। ऐसी परिस्थिति में यदि हमें शस्त्र कटौती की नीति वैश्विक स्तर पर चलानी हो तो क्या करना होगा?

क्या आपको उचित लगता है?

सैन्यशक्ति बढ़ाने के प्रयत्न में राष्ट्र एक-दूसरे से हथियारों की होड़ शुरू करते हैं। हथियारों की होड़ के कारण असुरक्षा की भावना अधिक ही बढ़ जाती है। असुरक्षा की भावना राष्ट्रीय सुरक्षा के लिए खतरा बढ़ाती है। इस खतरे को टालने के लिए हथियारों की होड़ नहीं अपितु हथियारों की कटौती की आवश्यकता है।

परिच्छेद पढ़िए और उसके नीचे दिए गए प्रश्नों के उत्तर लिखिए।

प्रत्येक राष्ट्र को शांति और समझौता के माध्यम से अंतरराष्ट्रीय संघर्ष हल करने का प्रयत्न करना चाहिए। इसके लिए विविध राष्ट्रों में बातचीत और लेन-देन बढ़ाना चाहिए। विविध राष्ट्रों में जितना अधिक परस्परावलंबन होगा शांति और सुरक्षा उतनी ही अधिक बढ़ेगी। इससे अंतरराष्ट्रीय सहयोग बढ़ाने हेतु चर्चा तथा समझौते के लिए अलग-अलग माध्यम और मंच उपलब्ध होंगे। आर्थिक हानि के भय से राष्ट्र युद्ध टालने का प्रयास करेंगे।

१. उपर्युक्त परिच्छेद से कौन-सा संदेश मिलता है?

२. विविध राष्ट्रों में बातचीत किस प्रकार बढ़ सकती है?

३. आर्थिक हानि और युद्ध इनमें कौन-सा संबंध है?

खतरा पैदा करने वाला होता है इसलिए अन्य राष्ट्रों का समर्थन प्राप्त कर कुछ राष्ट्र राष्ट्रीय सुरक्षा पर आने वाले खतरे को कम करने का प्रयत्न करते हैं।

भारत की सुरक्षा व्यवस्था : भारत की सुरक्षा व्यवस्था में संरक्षण करने वाली थल सेना, नौसेना और वायु सेना इन तीनों सेनाओं का समावेश है। भारत की भौगोलिक सीमाओं की रक्षा की जिम्मेदारी थल सेना पर होती है तो सागरीय सीमाओं की रक्षा नौसेना करती है। भारतीय हवाई सीमा और आकाश के रक्षण की जिम्मेदारी वायु सेना की होती है। इन तीनों सेनाओं पर रक्षा मंत्रालय का नियंत्रण होता है। भारत की थल सेना बहुत बड़ी है तथा वह विश्व की सातवें क्रमांक की मानी जाती है। थल सेना के प्रमुख को थल सेनाध्यक्ष या 'जनरल' कहा जाता है। नौसेना प्रमुख को 'एडमिरल' और वायु सेना प्रमुख को 'एयर चीफ मार्शल' कहते हैं। इन तीनों सेनाओं में समन्वय रखने के लिए २०१९ में 'संरक्षण प्रमुख' (Chief of Defence Staff) पद का निर्माण किया है । प्रमुखों की नियुक्ति भारत के राष्ट्रपति करते हैं।

थल सेना

नौसेना

वायु सेना

खोजिए तो समझेगा.....

सैनिक शासन माने क्या?

क्या ऐसे शासन में लोकतंत्र होता है?

भारत के राष्ट्रपति सभी रक्षा दलों के प्रमुख (Supreme Commander of the Defence Forces) होते हैं। राष्ट्रपति की अनुमति के बिना रक्षा दलों को युद्ध अथवा शांति संबंधी निर्णय लेना संभव नहीं होता। राष्ट्रपति नागरी सत्ता का प्रतिनिधित्व करते हैं। लोकतंत्र में नागरी नेतृत्व को सैनिकीय नेतृत्व से श्रेष्ठ माना जाता है।

भारत की सुरक्षा व्यवस्था की तीनों सेनाएँ अद्यतम हो इसके लिए अनेक उपाय योजनाएँ की जाती हैं। इसके लिए कुछ अनुसंधान संस्थाएँ भी स्थापित की गई हैं। सुरक्षा दलों के सभी श्रेणियों के व्यक्तियों को अपने काम उत्तम ढंग से करने आए इसके लिए देश में अनेक प्रशिक्षण संस्थाएँ भी हैं। जैसे, पुणे की नैशनल डिफेंस अकादमी, दिल्ली का नैशनल डिफेंस कॉलेज आदि।

अर्ध सैन्य बल : भारत के रक्षा दलों की सहायता के लिए अर्ध सैन्य बल होते हैं। वे पूर्णतः सैनिकी नहीं होते और नागरी भी नहीं होते इसलिए उन्हें 'अर्ध सैन्य बल' कहा जाता है। रक्षा दलों की सहायता करना उनका प्रमुख काम होता है। सीमा सुरक्षा बल (Border Security Force), तटरक्षक दल (Coast Guard), केंद्रीय आरक्षित पुलिस बल (Central Reserve Police Force), शीघ्र कृति बल (Rapid Action Force) इन सभी का अर्ध सैन्य बलों में समावेश होता है।

रेल स्थानक, तेलसंग्रह, जलसंग्रह आदि महत्त्वपूर्ण स्थानों की सुरक्षा की जिम्मेदारी अर्ध सैन्य बलों की होती है। इसी तरह प्राकृतिक अथवा मानव निर्मित आपदाओं का प्रबंधन करने में इनका सहभाग होता है। शांति काल में देश की अंतरराष्ट्रीय सीमाओं की रक्षा करने की जिम्मेदारी अर्ध सैन्य बलों पर होती है।

सीमा समीप के क्षेत्रों में रहने वाले नागरिकों के मन में सुरक्षा की भावना निर्माण करना, तस्करी रोकना, सीमा पर गश्त देना ये काम सीमा सुरक्षा बल करता है।

भारत के सागरीय तटों की रक्षा करने हेतु तटरक्षक दल की निर्मिति की गई है। भारत की सागरी सीमा में मछली मार व्यवसाय को सुरक्षा देना, सागरी मार्ग से चोरी छिपे होने वाले व्यापार को रोकना आदि काम तटरक्षक दल करता है।

कानून एवं सुव्यवस्था रखने के काम में विविध राज्यों के प्रशासन की सहायता करने का काम केंद्रीय आरक्षित पुलिस बल करता है।

बम विस्फोट, दंगा-फसाद इनके कारण देश की सुरक्षा के लिए खतरा निर्माण हो जाने पर तीव्र गति से हलचल कर जनजीवन को सामान्य करने का काम शीघ्र कृति बल करता है।

विद्यार्थियों में अनुशासन तथा सैन्य शिक्षा की अभिरुचि निर्माण हो इस हेतु से राष्ट्रीय छात्र सेना अर्थात एन.सी.सी. की स्थापना की गई है। इसमें विद्यालय, महाविद्यालय के विद्यार्थी सहभागी हो सकते हैं।

गृहरक्षक दल: स्वातंत्र्य पूर्व काल में गृहरक्षक दल (होम गार्ड) संगठन की स्थापना की गई। गृहरक्षक दल में सहभागी होकर नागरिक देश की सुरक्षा में सहायक बन सकते हैं। बीस से पैंतीस वर्ष आयु गुट के कोई भी स्त्री-पुरुष नागरिक इस दल में भरती हो सकते हैं।

पुलिस की तरह सार्वजनिक सुरक्षा रखना, दंगा-फसाद तथा बंद के दौरान दूध, पानी आदि जीवनावश्यक वस्तुओं की आपूर्ति करना, परिवहन की व्यवस्था करना, भूकंप, बाढ़ जैसी प्राकृतिक आपदाओं के समय लोगों की सहायता करना आदि काम इस दल को करने पड़ते हैं।

भारत की सुरक्षा के सामने चुनौतियाँ

- स्वतंत्रता से आज तक भारत की सुरक्षा को पाकिस्तान और चीन इन राष्ट्रों ने खतरा निर्माण करने का प्रयत्न किया है। भारत और पाकिस्तान में अनेक विवादास्पद प्रश्न हैं, जैसे- कश्मीर की समस्या, पानी के बँटवारे को लेकर विवाद, घुसपैठ की समस्या, सीमा विवाद आदि। चर्चा और समझौता के जरिए भारत इन प्रश्नों को हल करने का निरंतर प्रयत्न कर रहा है। (भारत पाकिस्तान संबंध के विषय में आप अध्याय ६ में अधिक अध्ययन कर सकते हैं।)
- एशिया महाद्वीप में भारत और चीन महत्त्वपूर्ण देश हैं। वर्ष १९६२ में चीन के

साथ हमारा युद्ध भी हुआ है। भारत के पड़ोस में होने वाले राष्ट्रों पर अपना प्रभुत्व स्थापित करने का प्रयत्न चीन द्वारा किए जाने के कारण भारत-चीन संबंधों में तनाव है। सीमा रेखा के संबंध में भी भारत और चीन में विवाद है।

- भारत की सुरक्षा को केवल बाहर के राष्ट्रों की ओर से ही खतरा नहीं है अपितु आंतरिक क्षेत्रों से भी सुरक्षा के लिए खतरा निर्माण करने का प्रयत्न हो रहा है। राष्ट्रीय सुरक्षा के संदर्भ में अब बाह्य सुरक्षा तथा आंतरिक सुरक्षा जैसा अंतर महत्त्वपूर्ण नहीं रह गया। धर्मवाद, प्रांतवाद, वैचारिक भिन्नता, वंशवाद, आर्थिक आदि पर आधारित अनेक विद्रोही आंदोलन, अंतर्गत क्षेत्रों में अस्थिरता निर्माण करते हैं। जैसे-नक्सलवादी आंदोलन।
- आतंकवाद भारत की अंतर्गत सुरक्षा के संदर्भ में सबसे बड़ी चुनौती है। आतंकवाद एक वैश्विक समस्या है। आतंकवाद नष्ट हो इसके लिए भारत प्रयत्नशील है।

मानवी सुरक्षा

राष्ट्रीय सुरक्षा की कल्पना में शीतयुद्ध के बाद के काल में परिवर्तन हुआ है तथा वह अधिक व्यापक हो गई है। राष्ट्रीय सुरक्षा का तात्पर्य केवल देश की सुरक्षा नहीं बल्कि उसमें रहने वाले नागरिकों की भी सुरक्षा ऐसा नया विचार उसमें आया है क्योंकि देश की सुरक्षा अंततः नागरिकों के लिए ही होती है। इसीलिए नागरिकों को केंद्र स्थान में रखकर सुरक्षा का नए सिरे से विचार करना ही मानवी सुरक्षा है। मानवी सुरक्षा में सभी प्रकार के खतरों से मनुष्य की रक्षा करना, उन्हें शिक्षा, स्वास्थ तथा विकास के अवसर प्राप्त कर देना अपेक्षित है।

निरक्षरता, दरिद्रता, अंधविश्वास, पिछड़ापन दूर कर सबको सम्मान के साथ जीने के लिए अनुकूल परिस्थिति निर्माण करना इसका समावेश भी मानवी सुरक्षा में होता है। अल्पसंख्यक तथा दुर्बल घटकों के अधिकारों की रक्षा भी मानवी सुरक्षा के लिए आवश्यक है।

मानवी सुरक्षा में आने वाली चुनौतियाँ

(१) मानवी सुरक्षा में आने वाली सबसे बड़ी चुनौती है आतंकवाद। आतंकवाद का लक्ष्य ही सामान्य, निरपराध मनुष्य होते हैं। उनके मन में आतंक अथवा भय निर्माण कर उनमें असुरक्षा की भावना निर्माण करना ही आतंकवाद का हेतु होता है। अतः मानवी सुरक्षा के लिए आतंकवाद नष्ट करना आवश्यक है।

चर्चा कीजिए ।

- क्या आपको लगता है कि मानवी सुरक्षा के लिए लोकतांत्रिक शासन प्रणाली ही उपयुक्त है? चर्चा में आप कौन-से बिंदु रखेंगे?
- मानवी सुरक्षा के लिए पारिवारिक स्तर पर कौन-से प्रयत्न किए जा सकते हैं?

(२) पर्यावरण में आए परिवर्तन तथा प्रदूषण के कारण भी मानव जीवन के लिए खतरा निर्माण हुआ है। एड्स, डेंग्यू, चिकनगुनिया, स्वाइन फ्लू, इबोला, कोरोना जैसे रोगों ने बड़ी चुनौतियाँ पैदा की हैं। ऐसे रोगों से मानव की रक्षा भी मानवी सुरक्षा का घटक माना जाता है।

आपको क्या लगता है?

समाज में बढ़ता हिंसाचार मानवी सुरक्षा के लिए खतरा निर्माण करता है। हिंसाचार न बढ़े इसलिए सभी स्तरों पर शांति प्रक्रिया निर्माण कैसे की जा सकेगी?

भारत की सुरक्षा व्यवस्था के स्वरूप का अध्ययन हमने इस अध्याय में किया। राष्ट्रीय सुरक्षा से मानवी सुरक्षा, ऐसा सुरक्षा संबंधी कल्पना में हुए परिवर्तन को भी हमने इस अध्याय में समझा। अगले अध्याय में हम संयुक्त राष्ट्र संघ इस अंतरराष्ट्रीय संगठन का अध्ययन करने वाले हैं। मानवी सुरक्षा के लिए वह कौन-सी उपाय योजना करता है, यह समझेंगे।

स्वाध्याय

१. दिए गए विकल्पों में से उचित विकल्प चुनकर कथन पूर्ण कीजिए।

(१) भारत के .... सुरक्षा विभाग के प्रमुख होते हैं।
(अ) प्रधानमंत्री (ब) राष्ट्रपति
(क) रक्षामंत्री (ड) राज्यपाल

(२) भारत के सागरी किनारों की रक्षा की जिम्मेदारी वाला दल –
(अ) थल सेना (ब) तटरक्षक दल
(क) सीमा सुरक्षा बल (ड) शीघ्र कृति बल

(३) विद्यार्थियों में अनुशासन तथा सैन्य शिक्षा की रुचि निर्माण करने के लिए .... की स्थापना की गई।
(अ) बी.एस.एफ. (ब) सी.आर.पी.एफ.
(क) एन.सी.सी. (ड) आर.ए.एफ.

२. निम्नलिखित कथन सत्य हैं या असत्य कारण सहित स्पष्ट कीजिए।

(१) मानवी सुरक्षा के लिए आतंकवाद को नष्ट करना आवश्यक है।
(२) प्रत्येक राष्ट्र स्वयं के लिए मजबूत सुरक्षा व्यवस्था निर्माण करता है।
(३) भारत और पाकिस्तान के बीच कोई भी विवादास्पद प्रश्न नहीं हैं।

३. निम्न अवधारणा स्पष्ट कीजिए।

(१) शीघ्र कृति बल के कार्य
(२) मानवी सुरक्षा
(३) गृहरक्षक दल

४. निम्न प्रश्नों के उत्तर संक्षेप में लिखिए।

(१) राष्ट्र की सुरक्षा को किन बातों से खतरा निर्माण होता है?
(२) सीमा सुरक्षा बल के कार्य लिखिए।
(३) मानवी सुरक्षा से क्या तात्पर्य है?

५. दी गई सूचना के अनुसार कृति कीजिए।

(१) सुरक्षा दल संबंधी निम्न तालिका पूर्ण कीजिए।

सुरक्षा दल का नाम	कार्य	प्रमुख	वर्तमान कार्यरत प्रमुख का नाम
थल सेना	-------	----	-------
-----	-------	एडमिरल	-------
----	भारत की हवाई सीमा तथा आकाश की रक्षा करना।	----	-------

(२) 'भारत की सुरक्षा के सम्मुख चुनौतियाँ' अवधारणा निम्न आकृति की सहायता से दर्शाएँ।

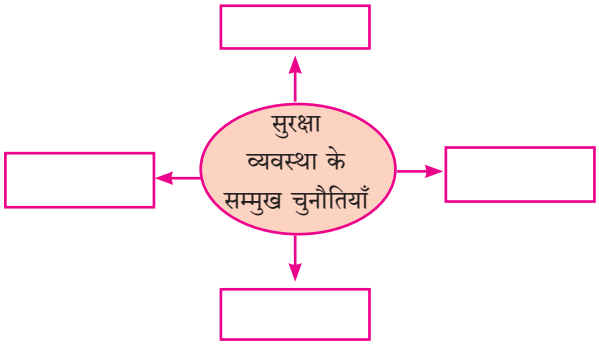

उपक्रम

'भारत की सुरक्षा के सम्मुख चुनौतियाँ' इस विषय पर विद्यालय में चर्चासत्र आयोजित कीजिए।